अप्रैल 2020

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

"इन मनुष्यों के हाथ में घड़ी भर भी
जीने की सत्ता नहीं है।
किस सेकन्ड मर जाएँगे उसका भी ठिकाना
नहीं है और रुपयों की चिंता करते रहते हैं!"

26 फरवरी 2020
सीनियर सिटिज़न यात्रा

29 फरवरी से 2 मार्च 2020
भावनगर
सत्संग-ज्ञानविधि

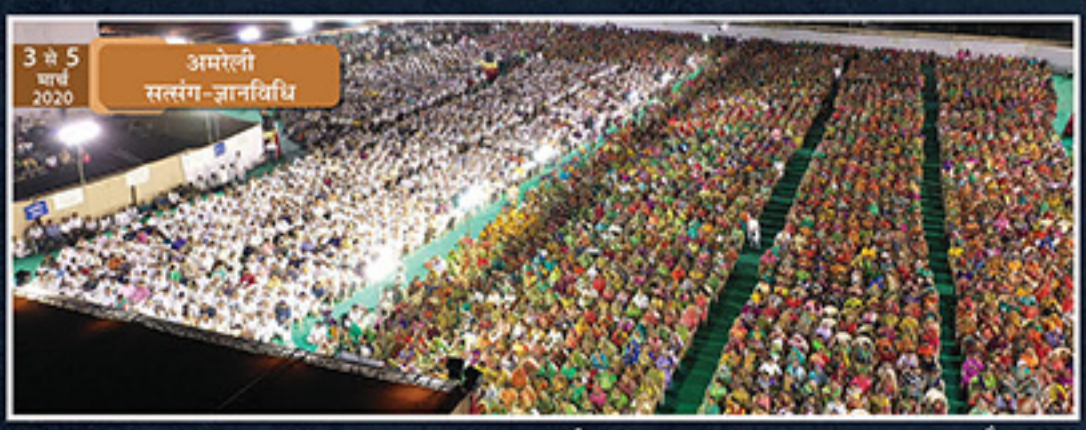
3 से 5 मार्च 2020
अमरेली
सत्संग-ज्ञानविधि

वर्ष : 15 अंक : 6
अखंड क्रमांक : 174
अप्रैल 2020
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2020
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

व्यक्तियों के साथ पैसों के व्यवहार का हल

संपादकीय

हर एक व्यक्ति के दैनिक जीवन में पैसे का व्यवहार तो आता ही है। लेकिन पैसे का व्यवहार करते समय खुद की क्या समझ होनी चाहिए या जब कोई अपने से लिए हुए पैसे न लौटाए तब क्या करना चाहिए या फिर यदि हमने किसी से पैसे लिए हों तो वहाँ पर कैसी जागृति रखनी चाहिए। जब पैसों के बारे में किसी से टकराव हो जाए, तब क्या करना चाहिए, पैसों के हर एक व्यवहार में फाइलों का समभाव से निकाल (निपटारा) कैसे करना चाहिए वगैरह बातों के बारे में परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) द्वारा उद्बोधित व्यवहारिक एवम् आध्यात्मिक समझ का यहाँ पर संकलन किया गया है।

दादाश्री खुद भी एक बिज़नेसमैन थे। अत: उनका भी पैसों का लेन-देन था। दादाश्री का स्वभाव बहुत दयालु और भावुक था, वे तो किसी पर दावा करते ही नहीं थे बल्कि जहाँ वे वसूली करने जाते थे, वहाँ भी अपने पास से पैसे देकर आते थे। वे खुद तो सिर्फ छूटने के कामी थे। इसलिए उन्होंने वसूली नहीं की और अपने पैसे छोड़ दिए। एक बार एक व्यक्ति को उन्होंने पाँच सौ रुपये उधार दिए थे लेकिन वह व्यक्ति पैसा लौटाने के बजाय उनसे ही पैसे माँगने लगा, तब पाँच सौ रुपये देकर निकाल किया। क्या ऐसा कहीं भी देखने को मिलेगा?

दादाश्री कहते हैं, ''यदि कोई अपने दिए हुए पैसे वापस न दे तो हम 'व्यवस्थित' मानकर नहीं बैठ सकते। उन पैसों को वापस लेने के लिए व्यवस्थित जितने प्रयत्न करवाए उतने सहज प्रयत्न तो करने ही चाहिए। फिर भी यदि पैसे वापस न आएँ तो समझना कि व्यवस्थित है। फिर 'हुआ सो न्याय' और 'भुगते उसी की भूल' स्वीकार कर लेना। ऐसा सब नहीं करना चाहिए कि फिर उसके पीछे ही पड़ जाना या फिर कोर्ट में दावा करें। क्योंकि इससे वह व्यक्ति अपने साथ बैर बाँध सकता है।''

यदि हमने किसी से पैसे उधार लिए हों, तब हमें उन पैसों को जल्द से जल्द लौटाने के भाव रखने चाहिए। और यदि ऐसा हो कि पैसे वापस न दे सकें तो भी भाव तो बिगड़ना ही नहीं चाहिए। कम-ज़्यादा पैसे देकर भी सामने वाले के मन का समाधान हो जाए, उस तरह से फाइल का निकाल कर देना चाहिए। वर्ना यदि सामने वाला बैर बाँधेगा तो हमें मोक्ष में नहीं जाने देगा। क्योंकि कुदरत में पैसे का कर्ज़ नहीं होता, राग-द्वेष का कर्ज़ होता है, इसलिए हमें साफ भाव रखकर फाइल का समभाव से निकाल कर देना चाहिए। समभाव से निकाल करने से ही मोक्ष होता है।

दैनिक जीवन में पैसों के व्यवहार से संबंधित खड़ी होने वाली फाइलों का किस तरह से समभाव से निकाल करना चाहिए, ताकि बैर न बंधे और मोक्षमार्ग में आगे बढ़ सकें, उस आशय से निकली दादाश्री की वाणी का यहाँ पर यथार्थ अध्ययन हो सकता और अध्यात्म मार्ग में प्रगति करने के लिए हमें पैसों की फाइलों का समभाव से निकाल करने में यह वाणी उपयोगी सिद्ध हो, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

व्यक्तियों के साथ पैसों के व्यवहार का हल

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

पैसे वापस लेते समय भी उतना ही विवेक

प्रश्नकर्ता : कोई व्यक्ति हमें रुपये लौटाने वाला हो, हमने उसे दिए हों, वे उससे वापस लेने हों और यदि वह न लौटाए तो फिर हमें वापस लेने के लिए प्रयत्न करने चाहिए या फिर यों समझकर, संतुष्ट होकर बैठे रहना है कि 'हमारा कर्ज़ चुक गया?'

दादाश्री : ऐसा नहीं। यदि वह अच्छा आदमी हो तो प्रयत्न करना और यदि कमज़ोर हो तो छोड़ देना।

प्रश्नकर्ता : प्रयत्न करने चाहिए या फिर यों मान लेना है कि यदि हमें वापस मिलने होंगे तो घर बैठे दे जाएगा और यदि न आए तो क्या यों समझना है कि 'हमारा कर्ज़ चुक गया?'

दादाश्री : नहीं-नहीं। इतना सब मत मानना। हमें स्वाभाविक रूप से प्रयत्न करना चाहिए। हमें उनसे कहना चाहिए कि 'हमें ज़रा पैसों की तंगी है, यदि आपके पास हों तो हमें भिजवा देना।' इस तरह विनयपूर्वक, विवेक से कहना चाहिए और यदि न आएँ, तो फिर हमें समझ जाना है कि हमारा कोई हिसाब रहा होगा, वह चुक गया। लेकिन यदि हम प्रयत्न ही नहीं करेंगे तो वह हमें मूर्ख समझेगा और वह उल्टा चलेगा।

प्रश्नकर्ता : तो क्या उसके लिए सामान्य रूप से प्रयत्न करके देखें?

दादाश्री : सामान्य यानी उनसे कहना कि, 'भाई, हमें ज़रा पैसों की तंगी है, यदि आपके पास हों तो ज़रा जल्दी भेज दो, तो अच्छा रहेगा।' लेने वाले में जितना विवेक होता है न, उतना ही विवेक हमें रखना चाहिए। हमसे पैसे लेते समय वह जितना विवेक रखता है उतना ही विवेक हमें उससे पैसे वापस लेते समय रखना है।

सहज प्रयत्न करने चाहिए

'व्यवस्थित' के बाहर कुछ भी नहीं हो सकता। फिर भी हमें 'व्यवस्थित' का अर्थ ऐसा नहीं लगना चाहिए कि हम सोते रहें और सबकुछ हो जाएगा। यदि 'व्यवस्थित ' कहना हो तो उसके लिए हमारे प्रयत्न होने चाहिए। फिर भी प्रयत्न तो, जितने 'व्यवस्थित' करवाए उतने ही करने पड़ेंगे। लेकिन हमारी इच्छा क्या होनी चाहिए? प्रयत्न करने की। फिर 'व्यवस्थित' जितने करवाए उतने प्रयत्न करना। प्रयत्न में फिर ऐसा नहीं होना चाहिए कि, दस बजे से वसूली के लिए निकल पड़ें। फिर यदि वह व्यक्ति नहीं मिले तो फिर से बारह बजे गए, फिर भी यदि न मिले तो घर लौटकर फिर से डेढ़ बजे चले जाएँ, ऐसा नहीं करना चाहिए। प्रयत्न यानी कि एक बार जाकर

आ जाना, फिर बाद में सोचना भी मत। यह तो, प्रयत्न करने में ही कितने चक्कर लगाता रहता है। प्रयत्न तो सहज होना चाहिए। सहज प्रयत्न किसे कहेंगे कि जिसे हम ढूँढ रहे हों, वह सामने आ मिले। यों उसके घर जाएँ तो वह नहीं मिले, लेकिन वापस लौटते समय वह मिल जाए। हमारा सबकुछ सहज प्रयत्न से होता है। सहज रूप से पूरा हिसाब सेट ही रहता है क्योंकि हमारा किसी तरह का कोई दखल ही नहीं है न!

परिणाम नहीं बदलने चाहिए

वास्तव में तो ऐसा है कि आपका सोचा हुआ बेकार नहीं जाता। आपका बोला हुआ बेकार नहीं जाता। आपका वर्तन बेकार नहीं जाता। आजकल तो लोगों का सब कैसा चला जाता है? कुछ भी फलता ही नहीं है। वाणी, विचार या वर्तन, कुछ भी नहीं फलता। तीन-तीन बार चक्कर लगाने पर भी वसूली वाला नहीं मिलता और यदि कभी मिल जाए तो वह चिढ़ जाता है। यह मार्ग तो कैसा है कि घर बैठे पैसे लौटाने आए! पाँच-सात बार वसूली करने गए और अंत में वह कहे कि 'एक महीने बाद आना', उस समय यदि आपके भीतर परिणाम (भाव) न बदले तो घर बैठे पैसे आएँगे। लेकिन आपके भाव बदल जाते हैं न? 'यह तो बेअक़्ल है, नालायक व्यक्ति है, ऐसे चक्कर लगाने पड़ रहे हैं।' ऐसे, यदि भाव बिगड़ जाएँ तो दोबारा जब आप जाओगे तो वह गालियाँ देगा। आपके भाव बदल जाते हैं इसलिए सामने वाला न बिगड़ने वाला हो फिर भी वह बिगड़ जाता है।

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ यह हुआ कि हम ही सामने वाले को बिगाड़ते हैं?

दादाश्री : हमने ही अपना सबकुछ बिगाड़ा है। हमें जितनी भी मुसीबतें आती हैं, वे सभी हमारी ही बिगाड़ी हुई हैं। उन्हें सुधारने का रास्ता क्या है? कि सामने वाला भले ही कितना भी दु:ख दे लेकिन उसके लिए हमें ज़रा सा भी उल्टा विचार न आए। उसे सुधारने का रास्ता यही है। इससे हमारा भी सुधरेगा और उसका भी सुधरेगा। संसार के लोगों को तो उल्टे विचार आए बगैर रहेंगे नहीं, इसीलिए तो हमने समभाव से *निकाल* करने को कहा है। समभाव से *निकाल* यानी क्या कि उसके बारे में कुछ भी सोचना ही नहीं है।

जैसे समुद्र में डाल रहे हों, ऐसा मानकर देना

ऐसा है न कि, हमने किसी के रुपये लिए-दिए हों, लेन-देन तो संसार में करना ही पड़ता है न! तो किसी व्यक्ति को कुछ रुपये दिए हों, तो यदि वे वापस न आएँ तो उसके लिए मन में क्लेश होता रहता है कि, 'वह कब देगा? कब देगा?' तो इसका कब अंत आएगा?

हमारे साथ भी ऐसा हुआ था न! इसकी चिंता तो हम शुरू ही नहीं करते थे कि पैसे वापस नहीं आएँगे तो। लेकिन साधारण रूप से टोकते ज़रूर थे, उनसे कहते ज़रूर थे।

किसी को यदि रुपये दिए हों, दो, डेढ़ या तीन प्रतिशत ब्याज की दर से तो यही समझकर देना कि वे कभी वापस नहीं आएँगे और जब वापस आ जाएँ तब समझना कि फायदा हुआ! पहले तो रुपये देना ही मत और यदि दे दिए तो फिर उसके लिए चिंता व *उपाधि* (परेशानी) मत करना। क्योंकि आपके हाथ में सत्ता ही नहीं है। लोगों के हाथ में एक पल जीने की भी सत्ता नहीं है। किस सेकन्ड मर जाएँगे उसका ठिकाना

नहीं है और रुपयों की चिंता करते रहते हैं! अरे, क्या रुपयों की चिंता की जाती होगी?

यदि आपको कभी ऐसा विचार आए कि 'यह पैसे नहीं लौटाएगा तो क्या होगा?' तो फिर आपका मन कमज़ोर होता चला जाएगा। इसलिए देने के बाद आपको ऐसा तय कर लेना है कि काली चिंदी में बाँधकर समुद्र में डाल रहे हैं, फिर क्या आशा रख सकते हैं? यानी देने से पहले ही आशा रखे बगैर देना, वर्ना देना ही मत।

यदि ब्याज और दलाली का व्यापार हो तो...

बाकी, इंसान को ब्याज नहीं लेना चाहिए। ब्याज लेने वाला व्यक्ति क्रुअल (दुष्ट) होता चला जाता है। यदि किसी स्त्री या बहन को ब्याज पर रुपये दिए हों तभी भी क्रुअल्टी (दुष्टता) करता है। लेकिन अभी ऐसा नहीं है इसलिए बैंक जितना लेते हैं उसी अनुसार लेना चाहिए। वास्तव में तो किसी को कर्ज़ देना ही नहीं चाहिए। क्योंकि जब वह लौटा नहीं सकता तब दु:ख भी उतना ही होता है, भयंकर दु:ख होता है।

किसी भी व्यक्ति को निजी तौर पर उधार नहीं देना चाहिए। वर्ना मन कसाई जैसा हो जाता है। इसलिए हमने तो अपने भागीदार से पहले ही कह दिया था कि 'हम ब्याज दे कर लाएँगे लेकिन हमें ब्याज नहीं लेना है।'

प्रश्नकर्ता : किसी को व्यापार के लिए हज़ार-दो हज़ार डॉलर देने के बाद यदि हम उन लोगों से इतना कहें कि 'जितना बैंक में बनता है, मैं उतना ब्याज लूँगा', तो क्या ऐसा चलेगा?

दादाश्री : ब्याज लेने में कोई हर्ज नहीं है। लेकिन ये तो, ब्याज लेने का व्यापार करते हैं, व्यापार ही ब्याज और दलाली का। आपको क्या करना चाहिए? जिसे उधार दिए हैं उससे कहना चाहिए कि 'बैंक में जितना ब्याज है, उतना आपको मुझे देना पड़ेगा।' लेकिन फिर भी यदि किसी के पास ब्याज भी नहीं है, मूलधन भी नहीं है तो वहाँ पर मौन रहना। ऐसा व्यवहार मत करना कि उसे दु:ख हो, ऐसा मानकर चला लेना कि अपने पैसे डूब गए।

प्रश्नकर्ता : और फिर आप्तवाणी में ऐसा भी कहा है कि देते वक्त पूछ लेना कि 'कब लौटाओगे? साल, डेढ़ साल में लौटा देना। लेकिन मन में ऐसा मान लेना कि डूब ही गए।'

दादाश्री : आप ऐसा ही मानकर चलना कि डूब गए। यदि समुद्र में गिर जाएँ तब माँगते हैं क्या किसी से? नहीं माँगते न?

अब, यदि हीरे की अंगूठी पहनकर घूम रहे हों और कोई गुंडा आकर कहे, कि 'ऐ, दे दो!' तो सबकुछ दे देना पड़ेगा या नहीं? वहाँ पर किसी प्रकार का दावा (क्लेम) करते हैं? धन का स्वभाव कैसा है, चले जाने का। टाइम आने पर चला जाता है। इसलिए मन में से यह भाव ही निकाल दो और निश्चय करो कि अब, यह ब्याज का व्यापार करना ही नहीं है।

यों चुक जाते हैं, सारे हिसाब

प्रश्नकर्ता : हमने किसी व्यक्ति को पाँच सौ रुपये दिए और वह वापस न कर सका और दूसरी ओर हमने पाँच सौ रुपयों का दान दिया, तो इन दोनों में क्या फर्क है?

दादाश्री : दान देना अलग चीज़ है। उसमें दान लेने वाला कर्ज़दार नहीं बनता। आपके दान

का बदला आपको दूसरी तरह से मिलता है। दान लेने वाला व्यक्ति बदले में कुछ नहीं देता। जबकि उधारी तो आप जिससे रुपये माँगते हो उसे आपको वापस देना ही पड़ता है। फिर अंत में दहेज के रूप में ही सही लेकिन वह रुपये देगा। अपने में ऐसी कहावत है न कि 'लड़का है तो गरीब परिवार का लेकिन खानदानी है। इसलिए उसे पचास हज़ार का दहेज दो!' यह किस बात का दहेज दे रहा है? यह तो जितना वह माँग रहा है उतना ही दे रहा है। यानी ऐसा सारा हिसाब है। एक तो लड़की देता है और ऊपर से रुपये भी देता है। अत: यों सभी हिसाब चुक जाते हैं।

कुदरत का नियम

आपसे कोई रुपये ले गया और फिर तीन या चार साल बीत गए। आपकी रकम शायद कोर्ट के कानून से बाहर चली गई लेकिन नेचर (कुदरत) का कानून तो कोई नहीं तोड़ सकता न! नेचर के कानून में रकम ब्याज सहित वापस आती है। यहाँ के कानून में कुछ नहीं मिलता, यह तो सामाजिक कानून है। लेकिन उस नेचर के कानून में तो ब्याज सहित मिलता है। इसलिए यदि कहीं कोई हमारे तीन सौ रुपये नहीं दे रहा हो तो हमें उससे वापस लेने चाहिए। वापस लेने के पीछे का कारण यह है कि यदि वह भाई मूलधन ही नहीं देगा तो फिर कुदरत का ब्याज तो कितना ज़्यादा हो जाएगा! सौ-दो सौ साल में तो वह रकम कितनी हो जाएगी! इसलिए हमें उससे रुपये वापस ले लेने चाहिए। ताकि वह बेचारा ज़्यादा जोखिम में तो न पड़े। लेकिन यदि वह लौटाए ही नहीं और जोखिम में पड़े तब फिर हम उसके लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : कुदरत के ब्याज की दर क्या है?

दादाश्री : नैचुरल इन्टरेस्ट इज़ वन परसेन्ट, पर इयर (कुदरत के ब्याज की दर 1 प्रतिशत है।) अर्थात् सौ रुपये पर एक रुपया! यदि वह तीन सौ रुपये न लौटाए तो कोई हर्ज नहीं है। आप उससे कहना कि हम दोनों दोस्त हैं, हम साथ में ताश खेलेंगे। क्योंकि आखिरकार आपकी रकम कहीं जाएगी तो नहीं ही न!

संसार है न्याय स्वरूप

कुछ लोग कहते हैं कि, 'हमने किसी को रुपये उधार दिए हैं, वे सब डूब जाएँगे।' नहीं, यह संसार बिल्कुल भी ऐसा नहीं है। कुछ लोग कहेंगे, 'पैसे दिए वे तो फँसेंगे ही नहीं।' जगत् ऐसा भी नहीं है। जगत् खुद के हिसाब से ही है। अगर आप सही हो तो कोई आपका नाम नहीं ले सकेगा। ऐसा है यह जगत्।

अपनी तीन हज़ार की घड़ी हो और फ़ोर्ट एरिया में गिर गई। फ़ोर्ट एरिया यानी महासागर कहा जाएगा। महासागर में गिर जाए तो फिर मिलना मुश्किल है। आप आशा भी नहीं रखते लेकिन तीन दिन बाद अखबार में विज्ञापन आता है कि यह घड़ी जिसकी है, वह सबूत और खबर छपाने का खर्च देकर ले जाए। तो ऐसा है यह जगत्, एकदम न्यायस्वरूप! आपके रुपये न लौटाए, वह भी न्याय है और लौटा दे, वह भी न्याय है। मैंने बहुत पहले ही यह पूरा हिसाब निकाल लिया था कि यदि रुपये नहीं लौटाए, तो इसमें किसी का दोष नहीं है। इसी तरह, लौटाने वाले का उपकार कैसा? इस जगत् का संचालन तो अलग ही तरह का है !

न्याय देखने मत जाना। न्याय देखने जाओगे तो कोर्ट में जाना पड़ेगा, वकील रखना पड़ेगा।

जो हुआ वही 'करेक्ट', ऐसा मानकर वकील मत रखना।

वह सब तो अपने न्याय के अनुसार है। यह सच या झूठ नैचुरल न्याय से होना चाहिए। नैचुरल न्याय क्या कहता है? कि 'जो हुआ वह करेक्ट, जो हुआ वही न्याय।' यदि आपको मोक्ष चाहिए तो जो हुआ उसे न्याय समझना और यदि आपको भटकना हो तो कोर्ट के न्याय से निपटारा लाना। कुदरत क्या कहती है? यदि आप ऐसा समझ जाते हो कि जो हुआ वही न्याय है तो आप निर्विकल्प होते जाओगे और यदि कोर्ट के न्याय से ऐसा करोगे तो विकल्पी होते जाओगे।

'हुआ सो न्याय', स्वीकार करो

जो हुआ सो न्याय है। कहीं और न्याय मत ढूँढना। जगत् का स्वभाव कैसा है? न्याय ढूँढना। 'मैंने उसे सौ रुपये दिए थे और ज़रूरत पड़ने पर मैंने पाँच रुपये माँगे फिर भी नहीं देता।' अरे! नहीं देता, वही न्याय है। हम उसे अन्याय कैसे कह सकते हैं?

बुद्धि तो अत्यंत तूफान मचा देती है। बुद्धि ही सब बिगाड़ती है न। बुद्धि क्या है? जो न्याय ढूँढे, उसे कहते हैं बुद्धि। वह कहेगी, 'पैसे क्यों नहीं देगा! सामान ले गए हैं न?' 'क्यों', ऐसा पूछा बुद्धि ने। उसने जो अन्याय किया, वही न्याय है। आपको तो वसूली के लिए जाते रहना है। कहना कि, 'हमें पैसों की बहुत ज़रूरत है और कुछ मुश्किलें भी हैं।' फिर लौट आना। लेकिन यदि ऐसा कहा 'वह कैसे पैसे नहीं देगा', तो वकील ढूँढने जाना पड़ेगा। सत्संग छोड़कर वहाँ बैठना पड़ेगा।

'जो हुआ सो व्यवस्थित! जो हुआ सो न्याय', कहने से बुद्धि चली जाती है। जो होता है वह 'न्याय' है, फिर भी व्यवहार में तो आपको पैसों की वसूली के लिए जाना ही पड़ेगा। लेकिन उस श्रद्धा के कारण आपका दिमाग़ खराब नहीं होगा, उस पर चिढ़ोगे नहीं और बेचैनी भी नहीं होगी। जैसे कोई नाटक कर रहे हो न, उस तरह वहाँ बैठना और कहना कि, 'मैं तो चार बार आया लेकिन आप नहीं मिले। इस बार शायद आपका पुण्य होगा या मेरा हो सकता है, जिससे हम मिल गए।' और इस तरह मज़ाक करते-करते वसूली करना। 'आप तो आनंद में हो न, मैं तो बहुत मुश्किल में फँसा हूँ।' वह पूछे कि, 'आपको कौन सी मुश्किल है?' तब कहना कि, 'मेरी मुश्किलें तो मैं ही जानता हूँ। न हों तो किसी के पास से मुझे दिलवाओ।' ऐसे इधर-उधर की बातें करके काम निकालना। लोग तो अहंकारी हैं इसलिए आपका काम हो जाएगा। अहंकारी न होते तो कुछ नहीं हो पाता। अहंकारी के अहंकार को ज़रा ऊपर चढ़ाएँ न, तो सारा काम कर देगा। आप कहो कि, 'पाँच-दस हज़ार दिलवा दो' फिर भी वह कहेगा, 'हाँ, दिलवाता हूँ।' यानी झगड़ा नहीं होना चाहिए, राग-द्वेष नहीं होना चाहिए। सौ चक्कर लगाने पर भी न दे, तो कोई बात नहीं। 'हुआ सो न्याय' कह देना। निरंतर न्याय ही!

वकील का भूत नहीं लगने देना

कोई व्यक्ति पैसे नहीं लौटाए, उसके पास नहीं हो और नहीं लौटा पाए, तब फिर अंत तक उसके पीछे मत पड़ना। वह बैर बाँधेगा! वह यदि भूत बनेगा तो हमें परेशान करके रख देगा। उसमें उस बेचारे की क्या गलती है? उसके पास नहीं

हैं इसलिए नहीं देता। होने पर भी नहीं लौटाते क्या लोग?

प्रश्नकर्ता : हों, फिर भी नहीं लौटाए तब क्या करना चाहिए?

दादाश्री : हों, फिर भी नहीं लौटाए, तो उसका आप क्या कर सकते हो? ज़्यादा से ज़्यादा आप दावा कर सकते हो! और क्या? उसे मारोगे तो पुलिस वाले आपको पकड़कर ले जाएँगे न? वर्ना छोड़ देना कि 'भाई होंगे तो आएँगे, नहीं आए तो गए।' तो वकील के भूत से तो पाला नहीं पड़ेगा न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन छोड़ नहीं पाते हम। सामने वाला इस तरह बदलता जाता है कि हमें छोड़ देने का मन ही नहीं होता।

दादाश्री : मन न हो तो फिर वकील का भूत लिपटेगा। फिर वकील कहेगा कि, 'हं, साढ़े नौ कहा था, पंद्रह मिनट देर क्यों हुई? बेअक़्ल हो!' अरे, छोड़ो चक्कर, फीस आप देते हो और गालियाँ देता है ऊपर से!

यानी आपको घबराना नहीं है। उस समय आपको वकील से क्या कहना चाहिए कि, 'साहब, हमारी और आपकी कन्डिशन (शर्त) फीस की है। मैं आपको फीस दूँगा और आप केस लड़ोगे। गालियों की कन्डिशन नहीं है। यह जो एक्स्ट्रा आइटम कर रहे हो, उसके लिए मैं दावा दायर करूँगा।'

प्रश्नकर्ता : नहीं जाएँ, वही बेहतर!

दादाश्री : कोर्ट में नहीं जाएँ, वही उत्तम है। जो समझदार व्यक्ति होगा, वह कोर्ट नहीं जाएगा। मेरा होगा तो आ जाएगा, नहीं आया तो गया। लेकिन ऐसे भूतों को नहीं बुलाएगा। भूत बिना बात के परेशान करता रहेगा। जब (कोर्ट में केस) जीतना होगा तब जीतेंगे लेकिन उससे पहले तो, 'बेअक़्ल हो', कहेगा। वह अक़्ल का बोरा! क्या ऐसा बोलना चाहिए? अपने वहाँ वे, वकील हैं न, वे कहते हैं, 'हम भी ऐसा बोलते हैं।' अरे, कैसे बेशर्म लोग हैं? यह तो अच्छा है, बेचारे लोग सीधे हैं इसलिए सुन लेते हैं, वर्ना यदि कोई आपको जूता मार देगा तब क्या करोगे?

हमारे भागीदार एक वकील के वहाँ गए थे। वे पैसे दे आए थे लेकिन उनके केस की सुनवाई शुरू नहीं हो रही थी। उन्होंने कहा, 'साहब, मेरे पैसे वापस मत देना लेकिन मेरा केस वापस दे दीजिए। तब उसने क्या कहा कि, 'यदि फिर से आए तो कुत्ते से कटवाऊँगा।' तब क्या करें? उसके बाद बड़ी मुश्किल से केस वापस ले आए। उनसे पैसे वापस नहीं लिए। बड़ी मुश्किल से समझा-बुझाकर केस वापस ले आए। फिर दूसरे वकील को केस दिया। वे बड़े प्रखर व्यक्ति थे, उन्हें केस दे आए। वहाँ नौ के बदले सवा नौ बजते तो कहते, 'कुत्ते जैसे हो, गधे जैसे हो, मेरा टाइम बिगाड़ दिया।' तब उस भाई ने कहा कि, 'आप बड़े आदमी होकर ऐसा बोल रहे हैं तो अन्य लोग क्या-क्या बोलेंगे? क्या ऐसी शर्त है?' वकील कहने लगे कि, 'आपने मुझे जगा दिया, आपने मुझे जगा दिया। मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए, लेकिन ऐसा निकल जाता है।' हमारे भागीदार ने ऐसा कहा कि, 'आप यह क्या कह रहे हैं? क्या अच्छे आदमी के लक्षण ऐसे होते हैं? अच्छे आदमी तो कितनी समझदारी वाली वाणी बोलते हैं?

भूल किसकी ?

एक ब्राह्मण, बनिए से चार सौ रुपये माँगता था, वह ज़ब्ती के लिए गया तो बनिया तो चिढ़ गया। 'साला, नालायक' ऐसा बोलता जाता और फिर कहता जाता कि 'मेरे जैसा नालायक कोई है ही नहीं न!' अरे, तुम खुद को गालियाँ दे रहे हो? ब्राह्मण को इतनी खराब गालियाँ दे दीं और फिर कह रहा है, 'मेरे जैसा नालायक कोई नहीं है।' रुपये नहीं दिए इसलिए ऐसी दशा हुई न! ऐसा कहता है और फिर उसे नालायक भी कहता है! अरे, कैसे आदमी हो? तरह-तरह की खोपड़ियाँ हैं। जब वह, उसे नालायक कहता है और फिर खुद के लिए ऐसा बोलता है, तब फिर हमें हँसना ही आएगा न!

यानी इस जगत् का क्या कर सकते हैं? इसलिए हमने तो क्या कहा है कि, 'भुगते उसी की भूल।' अपनी भूल है, ऐसा कब पता चलेगा? जब हमें भुगतना पड़ेगा तब। यह आसान रास्ता है न?

एक व्यक्ति ने आपके ढाई सौ रुपये नहीं लौटाए और आपके ढाई सौ रुपये गए, उसमें भूल किसकी? आपकी ही न? 'भुगते उसी की भूल।' इस ज्ञान से धर्म होगा, इससे सामने वाले पर आरोप लगाना, कषाय करना वगैरह सब छूट जाएगा। अर्थात् 'भुगते उसी की भूल' यह तो मोक्ष में ले जाए, ऐसा है! यह तो एक्ज़ेक्ट निकला है न! 'भुगते उसी की भूल।'

सामने वाले को दुःख न हो इसलिए

मैं तो किसी पर दावा नहीं करूँगा। क्योंकि एक बार मुझे परेशानी हुई थी, वह मुझे अभी भी याद है। वैसे तो बाहर हमारी गिनती अच्छी पार्टी में होती है। तो एक बार कोई जब पाँच हज़ार रुपये (चंदा) लेने आया तब मेरे मन में ऐसा हुआ कि 'अभी तंगी में यह कहाँ आया? अभी तो ब्याज से पैसे लाकर काम चलाते हैं और फिर इसके लिए पाँच हज़ार लाने पड़ेंगे। इसलिए मन में दुःख हुआ लेकिन देने पड़े। तभी से मुझे समझ में आ गया कि इस तरह से किसी से वसूली नहीं करनी है, माँगना नहीं है। क्योंकि यह तो मोक्षमार्ग है। यों माँगने से समाने वाले को दुःख होता है। यदि दुःख होता है तो वह मोक्षमार्ग नहीं है। यदि तेरी मर्ज़ी हो तो दे जा।

मुझे मन में ऐसा लगता है कि यदि उसके पास नहीं हों और मैं माँगूँगा तो फिर उसे दुःख होगा। उसके बजाय रहने दो न, अभी। और मुझे तो माँगना भी नहीं आता। इस दुनिया में मैं तो ऐसा हूँ कि खुद के पैसे माँगना भी नहीं आता। हाथ तो फैलाना ही पड़ता है न? मैंने ये हाथ कभी भी नहीं फैलाया भाई!

जहाँ से लेना हो वहीं दे आते

मेरा दयालु, भावुक स्वभाव! वसूली करने गया होता तो बल्कि देकर आ जाता! वैसे तो कभी वसूली करने जाता ही नहीं था। यदि कभी वसूली करने जाता और उस दिन यदि उन्हें तंगी होती तो बल्कि देकर आ जाता। मेरी जेब में अगले दिन के खर्चे के जो पैसे होते, वे भी दे आता! फिर अगले दिन खर्चे की परेशानी होती! इस तरह बीता है मेरा जीवन।

मेरे पास यदि पैसे आते थे तो अगले दिन तक रहते नहीं थे। यदि एक लाख होते तो दो-तीन दिन के बाद दसेक हज़ार बचते। इसलिए

भागीदार समझ गए थे कि इनके हाथ में पैसे नहीं टिकते इसलिए पैसों की पूरी व्यवस्था हमने हमारे भागीदार को सौंप दी!

वसूली नहीं करके छूट गए

लोगों को पता चला कि मेरे पास पैसे आए हैं, तो लोग मुझसे पैसे माँगने आते। 1942 से 1944 तक मैं सब को देता ही रहा। फिर 1945 में मैंने तय किया कि अब हमें तो मोक्ष की ओर जाना है। अब इन लोगों के साथ कहाँ तक संबंध रखें? इसलिए मैंने तय किया कि यदि पैसों की वसूली करने जाएँगे तो ये फिर से रुपये उधार लेने आएँगे, और व्यवहार चलता रहेगा। वसूली करेंगे तो पाँच हज़ार लौटाकर फिर दस हज़ार लेने आएँगे। उसके बजाय पाँच हज़ार उनके पास रहें तो उनके मन में रहेगा कि 'अब ये न मिलें तो अच्छा।' फिर कभी रास्ते में मुझे देख लेते न, तो वे दूसरी ओर से चले जाते थे। तब मैं समझ जाता कि मैं छूट गया, मुझे इन सब को छोड़ना था और इन सब ने मुझे छोड़ दिया!

अब मैं उस टोली में क्यों घुसा था? मान खाने के लिए। भीतर में मान खाने का मोह भरा हुआ था इसलिए, लेकिन अब निकलें कैसे? मुझे तो यह रास्ता मिल गया। जब-जब मेरे मन में होता कि इसमें से बाहर कैसे निकलें, उस घड़ी मुझे सूझ जाता। तब मैंने यह तय किया कि पैसे नहीं माँगने हैं, कोई रास्ता निकल आएगा। इतनी अच्छी तरह अंत आ गया कि किसी का आना ही बंद हो गया। उनमें से दो-चार लोग आकर दे गए होंगे। फिर तो मैंने उन्हें कह दिया कि, 'भाई, मैंने तो अब यह व्यवहार हीरा बा को सौंप दिया है।' 'अब मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है, घर में मेरी सत्ता ही नहीं है' फिर झंझट ही मिट गई न!

उन लोगों ने हमारे लिए क्या निष्कर्ष निकाला कि, ये तो 'उगाही ही नहीं करते, चलो हमारा काम बन गया'। इसलिए फिर उन लोगों ने दोबारा मुँह दिखाना ही बंद कर दिया। और मुझे तो यही चाहिए था। मतलब कि 'भला हुआ, मिटा जंजाल, सुख से भजेंगे श्री गोपाल', अर्थात् यह कला सूझी उस समय!

दयालु इंसान हल्की धौल लगता है

सन् 1942 में, जब मैं मुंबई में भागीदार के साथ व्यापार करने आया तब वे मुझे डाँटते थे। यों आया तो था 1946 में, लेकिन 1942 में वे मुझे यों डाँटते थे कि 'आपके ढीलेपन की वजह से लोगों ने आपके पैसे दबा लिए।' मेरा स्वभाव अलग प्रकार का था। वे मुझ से कहने लगे, 'आपकी वजह से ये सभी लुटेरे बन रहे हैं। ये सभी उल्टे चल रहे हैं। आपके नरम स्वभाव की वजह ये लुटेरे बन रहे हैं। ये आपका तो खा जाएँगे लेकिन दूसरों का भी खाना सीख जाएँगे!'

इसलिए फिर मुझे खुलासा भी करना पड़ता था न! कोई पूछे तो उसका खुलासा नहीं करना पड़ेगा और वह खुलासा भी नियमानुसार होना चाहिए। यों क्या मार-ठोककर खुलासा दे सकते हैं। फिर मैंने कहा, 'आपकी बात सही है कि मेरी वजह से कुछ लोग लुटेरे बन गए हैं, सभी लोग नहीं, दो-पाँच ही लोग। उन्हें एन्करेज़मेन्ट (प्रोत्साहन) मिला न! उसके बाद मैंने उनसे कहा, आप मेरी बात ठीक से, स्थिरता से सुनो, 'देखो, यदि मैंने उन्हें धौल मारी होती तो दयालु व्यक्ति कैसी धौल मारता है, वह आपके समझ में

आ रहा है?' तब कहने लगे, 'नहीं।' मैंने कहा, 'बिल्कुल हल्की!' कैसी मारता है? उससे बल्कि ज़्यादा एन्करेज़मेन्ट मिलता है! कहेगा, 'ओहोहो, बहुत हुआ तो इतना ही धौल लगाएँगे न! अब तो यही करना है।' इसलिए दयालु व्यक्ति का छोड़ देना ही ठीक है', ऐसा कहा।

अत: फिर मैंने उनसे कहा, भाई, मैं दयालु इंसान हूँ, इसलिए यदि मैं धौल लगाता तो भी हल्की ही लगाता। उसके बजाय उसे कोई मज़बूत मिल जाने दो न। यों करते-करते दो-चार बार में उसे ऐसा कोई मज़बूत मिल जाएगा न तो उसे ठीक कर देगा। मेरी हल्की धौल से वह सीधा नहीं होगा।

हल्की धौल से कोई सीधा होता है?

आपको समझ में आया न? खुलासा ठीक है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : वकील के भी गले उतर जाए, ऐसा हो गया तब!

क्या हम उसे धौल लगा सकते हैं? इसलिए हल्की धौल लगाता था। बल्कि एक जगह पर तो हमारी भाभी ने हुकुम दिया था, वहाँ पर वसूली करने गया था। मैंने सोचा, वसूली करने के बजाय यों ही थोड़े बहुत रुपये दे दें तो अच्छा रहेगा। मुझे वसूली करना अच्छा नहीं लगता था। दावा करना भी अच्छा नहीं लगता था। उतने में तो उसके यहाँ दूसरे ज़ब्ती करने वाले लोग आ गए। तब फिर बल्कि पंद्रह रुपये देकर आया। बेचारी उसकी पत्नी को दु:ख हो रहा था इसलिए उसे देकर आया। फिर मैंने सोचा अब, यह सब खाता ही बंद कर दो और यह सब रख दो, एक तरफ। इसमें बल्कि अपने पंद्रह रुपये खर्च हुए। कोई सौ रुपये की ज़ब्ती करने आया होगा। मेरे तो चार सौ रुपये थे और क्या? अब उस जमाने में तो वह बहुत बड़ी बात कहलाती थी न? यह तो सन 1939 की बात कर रहा हूँ।

पैसे तो गए लेकिन बड़ी सीख मिली

प्रश्नकर्ता : आपकी बात बताइए न, दादा। आपने एक व्यक्ति को पाँच सौ रुपये दिए थे फिर... ?

दादाश्री : वह बात तो नई ही तरह की है! वह बात बताता हूँ। सारे रुपये चले गए उसकी बात नहीं करता। वे गए तो गए लेकिन उन्हें कोई ले नहीं गया। वह मेरा ही हिसाब था और चुक गया। लेकिन एक नई ही बात!

हमने एक व्यक्ति को पाँच सौ रुपये दिए थे। और फिर हम तो कभी वापस माँगते नहीं थे। फिर एक दिन मुझे हमारे अकाउन्टेन्ट ने पूछा कि 'इसे दो साल हो गए हैं। क्या इस भाई को पत्र लिखूँ?' तब मैंने कहा 'नहीं, पत्र मत लिखना, उन्हें बुरा लगेगा।' और फिर एक दिन वे मुझे रास्ते में मिले, तब मैंने कहा, 'अकाउन्टेन्ट आपको पत्र लिखने का कर रहे थे। वे पाँच सौ रुपये भिजवा देना।' तब वे पूछने लगे, आप कौन से पाँच सौ की बात कर रहे हैं? तब मैंने कहा, 'दो साल पहले नहीं ले गए थे आप? उस समय के बहीखाते में देख लेना।' तब वे कहने लगे, 'वह तो मैंने आपको दिए थे। आप भूल गए हैं।' मैं समझ गया कि ऐसी डिज़ाइन जीवन में फिर कभी देखने और जानने को नहीं मिलेगी! अत: आज यह धन्य भाग है अपना! यह व्यक्ति सब से

बड़ी सीख देने के लिए आया है। फिर मैंने उससे क्या कहा? 'शायद, यह मेरी ही भूल है, आज दोपहर को आप घर आ जाना।' फिर चाय-पानी पिलाकर, उन्हें पाँच सौ रुपये दे दिए और रसीद काट दी। ऐसा इंसान दोबारा पूरे जीवन में नहीं मिलने वाला। तो भाई, वे पाँच सौ तो नहीं मिले और ऊपर से हज़ार चले गए। लेकिन यह सीख तो मिली न, कि ऐसे भी इंसान होते हैं! फिर हमें ज़रा सावधान होकर चलने का भाव होगा न! लेकिन मुझे वह कैसा इंसान मिल गया! हम सपने में भी कल्पना नहीं कर सकते, उपकार तो कहाँ गया!

इस संसार की बराबरी कैसे कर सकते हैं? आपने किसी को दिए हों न, तो वे काली चिंदी में बाँधकर समुद्र में डाल देने के बाद, रूपयों की आशा रखने जैसी मूर्खता है। कभी आ जाएँ तो जमा कर लेना और उस दिन उसे चाय-पानी पिलाकर कहना कि, 'भाई, आपका उपकार मानता हूँ कि आप रुपये लौटाने आए, वर्ना इस काल में तो रुपये वापस नहीं आते। आपने लौटा दिए, उसे आश्चर्य ही कहा जाएगा।' वह कहेगा कि, 'ब्याज नहीं मिलेगा।' तब कहना कि, 'मूलधन ले आए, यही बहुत है न!' समझ में आ रहा है? ऐसी दुनिया है। जिसने लिए हैं, उसे लौटाने का दु:ख है। जिसने दिए हैं, उसे वापस लेने का दु:ख है। अब इसमें कौन सुखी है? बाकी है 'व्यवस्थित!' नहीं लौटाए वह भी 'व्यवस्थित' है, और डबल लौटाए वह भी 'व्यवस्थित' है।

क्या समझ कर दिए?

प्रश्नकर्ता : आपने उसे और भी पाँच सौ क्यों दिए?

दादाश्री : फिर किसी जन्म में उस व्यक्ति से हमारा पाला न पड़े, इतनी जागृति रहनी चाहिए न, कि ये तो घर भूल गए। यदि वह कहे कि, 'मैं नहीं दे सकता हूँ', तो राइट ऑफ (खाता बंद) कर लेना। तब उन्हें चला लेंगे और अगले जन्म में मिल जाए तो कोई हर्ज नहीं! लेकिन ऐसे व्यक्ति के दर्शन तो किसी भी जन्म में नहीं होने चाहिए। हमारी जात (भले लोग) के तो कभी संपर्क में न आए तो अच्छा। हमारी जात से तो कोई कब तक मिल सकता है? यदि वह कहे कि, 'मेरे पास सुविधा नहीं है तो आप राइट ऑफ कर लो,' तब तक वह हमारी जात में आ सकता है। लेकिन जो ऐसा कहे वह तो हमारी जात के संपर्क में भी नहीं आना चाहिए। कुछ हो ही नहीं सकता न, हमारी जात से कोई लेना-देना ही नहीं है न! फिर कभी मिले ही नहीं तो अच्छा। फिर से उसके दर्शन ही न हों तो अच्छा। वह समझता है कि, 'मेरा तो फायदा हो गया।' हम कहेंगे कि, 'तुम्हारा फायदा हुआ और यह हमारी इच्छा थी। मेरा बहुत बड़ा हिसाब चुक गया न! तुम फायदा उठाओ!' ऐसी क्वॉलिटी की बराबरी कैसे कर सकते हैं? अब इसे न्याय कहें या अन्याय? किसी ने कहा, 'आप न्याय करवाकर रुपये वापस लो।' मैंने कहा कि, 'नहीं, इससे तो अब समझ में आया कि ऐसी भी क्वॉलिटी होती है। इसलिए ऐसी जात से तो दूर, बहुत दूर ही रहो और ऐसों के साथ तो सही गलत का न्याय करने जाएँगे तो तलवारें खिंच जाएँगी।'

अत: यह कैसा समभाव से *निकाल* किया! तो इससे निम्न स्तर के सभी लोगों से समभाव से *निकाल* करना है। अपने पैसे लेने थे, वे तो नहीं

लिए बल्कि ऊपर से उसे और भी दिए! ऐसा करके उससे छूट तो गया न! वह क्या समझा कि, 'मैंने कैसा मूर्ख बनाया!' भले ही उसने मूर्ख बनाया लेकिन फिर भी मैं तो छूट गया न! तेरी दृष्टि में भले ही मैं मूर्ख बना लेकिन तेरी दृष्टि में मैं गुनहगार तो नहीं रहा न! यदि मैं लुच्चा बनूँगा तो गुनहगार कहलाऊँगा न, कि 'मुझे लूट लिया।' लेकिन क्योंकि मैं मूर्ख बन गया इसलिए तेरी दृष्टि में मैं गुनहगार नहीं माना जाऊँगा। इस तरह संसार में ऐसे बैर से छूट जाना है निरा बैर ही है! सत्युग में सभी प्रेम से बंधे रहे होंगे जबकि कलियुग में तो सभी बैर से बंधे हुए हैं।

मानी को मान देकर, लोभी से धोखा खाए

अब वहाँ पर यदि आप कहो कि समाधान वृत्ति, वहाँ कैसे मेल बैठता? वहाँ हम *निकाल* कर देते हैं, समभाव से *निकाल*! आपको समझ में आया न, मैं क्या कहना चाहता हूँ? आफ्टर ऑल (अंत में) हमें इन झंझटों में नहीं पड़े रहना है और फिर, वह जो पाँच-सौ ले गया, वह किसी के हाथ की सत्ता नहीं है। व्यवस्थित की सत्ता के आधार पर, वह निमित्त है। उसे ऐसा व्यापार करना है इसलिए व्यवस्थित उसे मिलावा देता है। उसकी नीयत ऐसी है इसलिए और हमारे हिसाब में जाने वाले थे। और हमें बोध मिलता है।

उस समय आप कितने डिस्करेज (हताश) हो जाते, इन पाँच-सौ के बारे में! ऐसे तो हम होटल में पाँच-सौ रुपये खर्च कर देते हैं। खर्च करते हैं या नहीं? मुंबई गए हो और यदि अच्छी होटल हो तो दो दिन रूककर भी पाँच-सौ रुपये खर्च कर देते हैं। और यों पाँच-सौ रुपये गए तब हमें दुःख होता है। क्योंकि हम समाधान वृत्ति खोजते हैं। समाधान कभी भी नहीं हो सकता, कैसे होगा? जो बिल्कुल ऐसा उल्टा ही बोले उसे। अतः समभाव से *निकाल* कर दो। सही हो या गलत लेकिन केस खारिज कर दो! ताकि बैर नहीं बाँधे व कुछ भी नहीं। यदि उल्टा लिपट जाए तो उल्टा लिपट जा, सीधा तो सीधा लिपट जा! हम लोभी से ठगे जाते हैं और उसे खुश कर देते हैं! जो मानी हो उसे मान देकर खुश कर देते हैं। जैसे-तैसे खुश करके आगे निकल जाते हैं! हम इन लोगों के साथ खड़े नहीं रहते। 'एडजस्ट एवरीव्हेर'। ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ हम एडजस्ट नहीं होते!

कोई खराब आदमी हो और यदि हम उसके साथ एडजस्ट नहीं हों तो वह हमें छोड़ेगा नहीं। वह कहेगा 'मैं मोक्ष में नहीं जाने दूँगा, मोक्ष में नहीं जाने दूँगा।' नहीं कहेगा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, कहेगा।

दादाश्री : उसे कहने का हक़ है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : है।

दादाश्री : इसलिए उसके साथ बैर खत्म कर देते हैं। रिवेंज (बदला) ही हमें नहीं छोड़ता है न।

प्रश्नकर्ता : ठीक है, दादा।

दादाश्री : कहीं भी बैर नहीं बाँधना है!

किसी भी तरह से बैर छोड़ो

ग्राहक और व्यापारी के बीच संबंध तो होता है न? और जब व्यापारी दुकान बंद कर देता है तो क्या वह संबंध टूट जाता है? नहीं। ग्राहक तो याद रखता है कि 'इस व्यापारी ने मेरे

साथ ऐसा किया था, ऐसा खराब सामान दिया था।' लोग तो बैर याद रखते हैं। फिर चाहे भले ही आप इस जन्म में दुकान बंद कर दो लेकिन क्या वह अगले जन्म में आपको छोड़ेगा? नहीं। वह तो बैर वसूल करके ही रहेगा। इसीलिए भगवान ने कहा था कि 'किसी भी तरह से बैर छोड़ो।'

हमारे एक परिचित रुपये उधार ले गए थे। फिर लौटाने ही नहीं आए। तब हम समझ गए कि यह बैर से बंधा होगा, वे भले ही ले गए। इस तरह यदि पैसे छोड़कर भी बैर छूटता हो तो छोड़ दो। किसी भी तरह से बैर छोड़ो, वर्ना एक व्यक्ति के साथ का बैर भटकाता रहेगा।

बैर से छूटने के लिए समभाव से निकाल

यह संसार बैर से ही बंधा हुआ है। इसलिए मैंने समभाव से *निकाल* करने का कहा है न!

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : चाहे कैसी भी फाइल हो लेकिन उसका समभाव से *निकाल* करो।

निकाल करने से ही मोक्ष होता है। मैंने आपको सिर्फ समभाव से ही *निकाल* करने का कहा है। संसार व्यवहार में *निकाल* करना है और यहाँ समभाव से *निकाल* करना है। यदि समभाव से *निकाल* करोगे तो मोक्ष होगा ही। जबकि संसार व्यवहार चलाने के लिए *निकाल* करना है। संसार में कॉम्प्रोमाईज़ (समझौता) मुख्य चीज़ है। लड़ना तो भयंकर गुनाह है।

प्रश्नकर्ता : यदि अपना गलत नहीं हो फिर भी कॉम्प्रोमाईज़ कर लेना है?

दादाश्री : हाँ, कॉम्प्रोमाईज़ तो करना ही चाहिए न! यदि कॉम्प्रोमाईज़ नहीं करोगे तो उसका क्या भरोसा? वहाँ हमें भरोसा है कि अपना ऐसा हो ही जाएगा?

प्रश्नकर्ता : दादा, यह तो आपने अपूर्व बात बता दी कि 'लगाम ही छोड़ दो।'

दादाश्री : वह हम से मिला ही क्यों? किस नियम की वजह से हम से मिला है?

हम से मिला क्योंकि अपनी ही भूल है इसलिए। 'भुगते उसी की भूल।' समझ में आया न? जो भुगत रहा है उसकी भूल है।

यदि छूटना हो तो निबेड़ा लाओ

हमें ऐसा संयोग मिला? हमने ऐसे कौन से पाप किए होंगे जिससे कि ऐसा संयोग मिला? इसलिए इसका तो जल्दी से निकाल करना होता है। पाँच सौ में तो अच्छा हो गया। कल सुबह किसी बड़ी बात को लेकर उल्टा फँसा दे तो फिर क्या होगा? इसलिए इसका *निकाल* तो सब से पहले ही कर लेना चाहिए, हस्ताक्षर-मुहर सहित। यह तो संसार है! जिसे बंधना हो उसे जारी रखना चाहिए।

अब यदि छूटना हो तो निबेड़ा लाओ। देखो न, छूटने के लिए ये सेठ यहाँ आए। क्योंकि पूरी दुनिया में कोई गुनहगार है ही नहीं। जो गुनहगार दिखाई देता है, वह भ्रांति की दृष्टि से दिखाई देता है। सत्य दृष्टि से कोई गुनहगार है ही नहीं।

आप अपना संभालो

अब यदि ऐसे में उससे झगड़ पड़ें तो वह अपनी मूर्खता ही होगी न! यह तो दर्शन करने योग्य इंसान कहा जाएगा! अच्छा हुआ, मैंने तुझे

पैसे दिए और मेरे प्रति तेरी चित्तवृत्ति इस हद तक बदल गई! देने का गुण तो कहाँ गया और ऊपर से भारी अवगुण कर रहा है! इसलिए हम समझ गए कि तेरे दर्शन करने को मिले। उसे कहें 'सात सौ रुपये ले ले।' भाई, पाँच सौ तो गए लेकिन सात सौ दूसरे, बारह सौ का नुकसान हुआ लेकिन इतने में तो बहुत कुछ सीखने को मिला न! हम सभी तरह से छूट गए। ऐसा करने में हर्ज क्या है?

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस तरह से गलत प्रोत्साहन दिया, इसी से तो संसार बिगड़ा है।

दादाश्री : हाँ, संसार बिगड़ा है। लेकिन देखते रहना कि आपका न बिगड़े! आप अपना संभालो! क्योंकि वह व्यक्ति उल्टा चले बगैर रहेगा ही नहीं। उसने तय किया है जबकि हमें कोर्ट पुसाता नहीं। हमें कोर्ट के चक्कर लगाना नहीं पुसाता। इन वकीलों की दाढ़ी में हाथ डालना, क्या कोई अच्छी बात है? फिर वकील गाली देते हैं! 'देर से क्यों आए? बेअक़्ल हो, ऐसे हो, वैसे हो।' क्या कह रहे हो?

प्रश्नकर्ता : आपने ठीक कहा, अब फिट हो गया। अब मुझे बिगड़ना नहीं है, जो होना हो वह हो जाए।

दादाश्री : भगवान भी हर एक के साथ कॉम्प्रोमाईज़ करते थे। इसलिए हमने कहा है न, कि 'यदि मोक्ष में जाना है तो समभाव से *निकाल* करो।'

बैर मत बढ़ाना

फाइलों का समभाव से *निकाल* किया था, या ऐसा ही सब? यदि समभाव से *निकाल* किया हो तो किसी के साथ बैर नहीं बंधता। नया बैर मत बाँधना और पुराने बैर का *निकाल* कर देना। यदि आपको कुछ पुरुषार्थ करना नहीं आए तो अंत में इतना करना, बैर का *निकाल* करना।

भगवान ने कहा था कि 'इस जन्म में तू नया बैर मत बढ़ाना और पुराना बैर छोड़ देना।' पुराना बैर छोड़ने से कितनी शांति हो जाती है न! वर्ना, पहले तो लोग मूंछें मरोड़ते जाते थे और बैर बढ़ाते जाते थे, लेकिन अब, बैर मत बढ़ाना। दिनोंदिन बैर कम करना है। 'दादा' का कोई बैरी नहीं है। क्योंकि बैर का *निकाल* करके आए हैं। इस जन्म में सभी बैर का *निकाल* करके आए हैं और आपको यही सिखलाते हैं कि अब इस जन्म में बैर मत बढ़ाना।

कोई पेशेन्ट ऐसे होते हैं कि वे फीस के पैसे नहीं देते और बल्कि आपको धमकाते हैं। तब आप कहना कि, 'भाई, पैसे नहीं दोगे तो चलेगा'। तब भी वह क्या कहता है, 'डॉक्टर, मैं आपको देख लूँगा।' 'अरे, हमें देखकर क्या करोगे? हमें तो देख ही लिया है।' 'जैसे-तैसे करके केस खारिज कर देना।' ऐसा मत रखना कि कोर्ट में तारीखें मिलती रहें। हमें तो, जिस दिन की तारीख आई हो न, उसी दिन *निकाल* कर देना है। वर्ना कोर्ट में तारीखें मिलती रहेंगी और फिर केस आगे बढ़ता जाएगा और बैर बढ़ता जाएगा। हमें ऐसा रखना ही नहीं है।

जब कोई हमसे उधारी वसूलने आए तब

प्रश्नकर्ता : दादा, यदि हमने किसी से पैसे लिए हों और वापस करने के लिए, हमारे पास पैसे न हों तो फिर क्या करना चाहिए?

दादाश्री : मानो कि मैंने इनसे लाख रुपये

लिए और जब वे वापस लेने आएँ तब मेरे पास पैसे नहीं हैं। छः महीने तक या बारह महीने तक। तब मुझे उनसे ऐसा कह देना चाहिए कि 'थोड़ा टाइम लगेगा।' फिर भी यदि वे उल्टा-सुल्टा बोलें तो उनसे हम कहेंगे कि 'भाई, समता रखो। अंत में तो मैं पूरा चुका दूँगा।' अब उस समय यदि हमें खराब विचार आने लगे कि 'अब वे क्या कर लेगा', तो वह पुरुषार्थ है!

प्रश्नकर्ता : वह पुरुषार्थ हुआ?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : रिएक्शन (प्रतिक्रिया) हुआ न, उल्टा रिएक्शन!

दादाश्री : वह हमने उल्टा किया। वह भले ही उल्टा बोले लेकिन हमें उल्टा नहीं बोलना चाहिए। और यदि वे बहुत ज़्यादा उल्टा बोले, वकालत जैसा करे तो उन्हें एक ही वाक्य में कह देना कि 'भाई, मेरी और आपकी लक्ष्मी के लेन-देन की शर्त थी, ब्याज सहित। उसमें आपको मुझे डाँटने की शर्त नहीं थी! और यदि आप इस शर्त को शामिल करोगे, तो मुझे एक बार के दस हज़ार काट देने पड़ेगे। आपके एक्स्ट्रा आइटम के!' यदि वे बहुत रौब जमाए तो हमें उनसे कह देना है। हमें तो दिल से उनकी पाई-पाई चुका देनी है इसलिए उनसे साफ-साफ कह देना चाहिए।

मैंने मुंबई में एक व्यापारी से कह दिया था। मुझे भी एक ऐसा ही संयोग मिला था। वह तो डाँटने आया था, हमारे भागीदार को। मैंने कहा, 'भाई, एक्स्ट्रा आइटम मत करना। वर्ना पैसे कट जाएँगे। यदि आपको करना हो तो करो लेकिन पैसे कट जाएँगे।' फिर वह समझ गया। मैं इस नियम के हिसाब से काट लूँगा। ऐसी गड़बड़ कहीं चल सकती है? आपने एक्स्ट्रा की शर्त नहीं लगाई थी। ऐसा कुछ कहना तो चाहिए न!

चुका देने का ही भाव

हमें तय करना है कि 'कभी भी गलत नहीं करना है और इसके रुपये कभी न कभी, लेकिन इस ज़िंदगी में अवश्य ही चुका देने हैं।'

अतः हमें तो सिर्फ यही एक भाव रखना है कि 'किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख न हो और दूसरा यह, किसी की भी लक्ष्मी अपने पास न रहे।' साफ भाव रखना कि सारा कर्ज़ चुक जाए। क्योंकि मनुष्य के दस प्राण हैं। फिर, लक्ष्मी को ग्याहरवाँ प्राण कहा है। इसलिए यदि अपनी लक्ष्मी किसी के पास रहेगी तो कोई हर्ज नहीं, लेकिन किसी की लक्ष्मी अपने पास नहीं रहनी चाहिए। निरंतर यही ध्येय रहना चाहिए कि मुझे सब की पाई-पाई लौटा देनी है। फिर (यदि इस ध्येय को) *लक्ष* (जागृति) में रखकर खेल खेलोगे तो कोई हर्ज नहीं है। लेकिन खिलाड़ी मत बन जाना। यदि खिलाड़ी बन गए तो खत्म! इस संसार के कुछ कानून तो होंगे ही न, हर एक व्यापार उदय-अस्त वाला है। सबकुछ उदय-अस्त वाला ही होता है।

किसी का भी पैसा नहीं दबाना चाहिए

तो क्या अभी हम किसी से भी ऐसा कह सकते हैं कि, 'भाई, जितना चाहो व्यापार करो। घाटा हो जाए तो हर्ज नहीं है लेकिन मन में एक भाव तय कर लेना कि मुझे सब को लौटा देना है।' क्योंकि पैसा किसे प्यारा नहीं होता, यह बताओ। हर किसी को प्यारा ही **है**। पैसे बचाने

के लिए अपने बेटे को एक रुपये का नमकीन तक भी नहीं दिलाता लेकिन किसी और को पाँच हज़ार उधार दे देता है। यानी कि पैसा सभी को प्यारा होता है। इसलिए आपके मन में ऐसा भाव ही नहीं आना चाहिए कि किसी का पैसा डूब जाए। 'कुछ भी करके मुझे लौटाना ही है', शुरू से ऐसा डिसिज़न रखना ही चाहिए। यह बहुत बड़ी चीज़ है। किसी और चीज़ में दिवाला निकले तो चलेगा, लेकिन पैसे का दिवाला नहीं निकलना चाहिए। क्योंकि पैसा तो दु:खदायी है। पैसे को तो ग्यारहवाँ प्राण कहा गया है। इसलिए किसी के भी पैसे नहीं डुबाने चाहिए।

मान लो कोई साहब रिटायर होने के बाद मुंबई गए और मुंबई जाकर बड़ा सौदा किया। कमाने का लालच तो रहता है न, और उसमें उन्हें कुछ दो-तीन लाख रुपयों का नुकसान हुआ, तो क्या हाथ खड़े कर देने चाहिए? एक छोटे से कमरे में रहना पड़े फिर भी निश्चय करो न कि रुपये लौटाने ही हैं। ऐसा निश्चय करने पर साल-दो साल में सब ठीक हो जाएगा। आत्मा में अनंत शक्तियाँ हैं!

आजकल तो दस-बीस लाख रुपये दबाकर फिर दिवाला निकालते हैं, वह बहुत गलत है। अनंत जन्म बिगाड़ चुके हैं लेकिन एड किसी के पैसे नहीं दबाने चाहिए।

यदि भावना होगी तो रुपये दे सकोगे

नियम ऐसा है कि पैसे लेते समय ही ऐसा तय करके लेने चाहिए कि 'इसके पैसे मुझे लौटा देने हैं'। फिर उसके बाद हर चौथे दिन उसे याद करके ऐसी भावना करनी चाहिए कि 'ये पैसे जल्दी से जल्दी लौटा देने हैं।' ऐसी भावना होने पर रुपये लौटा पाओगे। वर्ना राम तेरी माया! रुपये नहीं लौटा पाओगे। ये सभी जो कर्ज़ लेते हैं न, तो वे तो जो वसूली करने आएगा, वह ले जाएगा। फिर ये दूसरे से माँग लाते हैं। किसी से एक से दस हज़ार लेता है और किसी दूसरे को पाँच हज़ार दे देता है। वापस किसी और से लेता है और किसी और दे देता है। इस तरह चक्कर पे चक्कर चलता रहता है! अंत में रोना पड़ता है।

नीयत नहीं बिगड़े, उतना संभालना

रुपये लेने से पहले हमें ऐसे भाव होते हैं। लेने से पहले ही ऐसा सोचना चाहिए कि लेंगे तो सही लेकिन देंगे कब? तो जिस भी भगवान को मानता हो, उनसे कहना कि 'हे भगवान मुझे इन पैसों को जल्द से जल्द लौटाने की शक्ति दीजिए' ऐसा बोल कर फिर लेना। तो उसे कहेंगे कि नीयत अच्छी है, उसे लोग दानत (इरादा) भी कहते हैं, और भी कुछ कहते हैं लेकिन मूल रूप से यह नीयत है।

यदि किसी को लौटा नहीं सकते हों, फिर भी मन में भावना ऐसी ही रखनी चाहिए कि कब दे दे! हमें ऐसा लगे कि यहाँ पैसे देने जैसे हैं, दान करने जैसा है, फिर भी यदि हम न दे पाएँ तो मन में भावना रखनी चाहिए। न दे सकें, उसमें हर्ज नहीं है लेकिन यदि भाव ही नहीं रखेंगे तो? यदि बीज ही नहीं डालेंगे तो उगेगा कैसे? इस तरह बीज डालेंगे तो कभी न कभी धूल आकर इकट्ठी हो जाएगी और वह उग निकलेगा। और यदि बीज ही नहीं डालेंगे तो? इसे नियति कहते हैं। नीयत अर्थात् बरकत। बरकत तो होनी चाहिए न?

इसलिए हम व्यापारियों को सब से पहले

यही सिखाते हैं कि नीयत न बिगड़े इतना ध्यान रखना, तो तू सुखी हो जाएगा। इस ज्ञान को तू संभालकर रखना। भले ही दु:खी हो जाओ, चाहे कुछ भी हो जाए, लेकिन ऐसा तय रखना कि देना ही है। तो फिर अंत में लौटा पाओगे। यदि सारे पैसे चले जाएँ, कर्ज़ हो जाए, फिर भी मन में ऐसा ही तय रखना है कि देना ही है।

यदि नीयत बिगड़ गई तो मार खानी पड़ेगी

आपको एक उदाहरण देता हूँ। यदि कोई किसी व्यक्ति से पचास हज़ार रुपये ले गया और फिर उसके पैसे चले गए, फिर उसके मन में ऐसा होता है कि, 'अब कैसे लौटाऊँगा?' तो जब तक पैसे थे तब तक देने का भाव था। और फिर जैसे ही खत्म हो गए तो फिर कुछ ही अरसे में उसने ऐसा तय किया कि 'छोड़ो न, अब क्या देना!' और बाद में उसने कमाया। लेकिन अंत तक साथ में यही रहा कि 'क्या देना।' जो अभिप्राय बनाया न, वह साथ में ही रहा। तब वह पैसे माँगने वाला क्या कहने लगा? हाँ, पैसे आ गए फिर भी आपकी नीयत ही खराब है! वही नियति है।

नीयत अर्थात् क्या? भाविभाव। भविष्य में जो होना है, आज उसका भाव करते हैं। 'नहीं देना है', ऐसा जो भाव किया, वह...

प्रश्नकर्ता : उसके लिए *दानत* शब्द है।

दादाश्री : *दानत* का उपयोग इसमें होता है, कि 'तेरी नीयत ठीक नहीं है।'

अत: मैं क्या कहना चाहता हूँ कि भले ही वहाँ पर पैसे का नुकसान हो गया, कुछ इधर-उधर हुआ तो मन में होगा कि अब कैसे लौटाएँगे? लेकिन फिर भी उस समय ऐसी दानत मत रखना कि 'अब क्या देना?' उस समय तो ऐसा ही रखना है कि 'मुझे मरने से पहले पैसे लौटा देने हैं और यदि नहीं लौटा सके तो कोई हर्ज नहीं, लेकिन जब भी पैसे आएँ तब मुझे पैसे लौटा देने हैं। यह वैज्ञानिक तरीका है।'

जो नीयत बिगड़ती है, वह नियति है। नियति में उसने नीयत बिगाड़ी। अब उसके लिए उसे मार खानी पड़ेगी। यदि नीयत नहीं बिगड़ेगी तो सीधे मोक्ष में चला जाएगा, यदि वह किसी भी बात में नीयत नहीं बिगाड़े और नियति का दुरुपयोग न करे तो!

यदि दानत साफ होगी तो कल्याण हो जाएगा

अब यदि नियति का दुरुपयोग होगा तो उसके लिए मार पड़ेगी। एकदम से मोड़ लिया। कितने ही जन्मों तक मुड़ता रहा। कहा, 'नीयत बिगाड़ गई। अब यदि अनुभवियों से पूछें कि 'साहब, नीयत न बिगाड़े तो फिर करें क्या? क्योंकि उसे लौटा नहीं पाऊँगा।' तब कहेंगे, 'यदि नहीं लौटा सकते तो सभी से कह दो कि साहब, अभी ज़रा दे नहीं पाऊँगा लेकिन मुझे लौटाने ही हैं।'

'यदि तेरी नीयत नहीं बिगड़ी तो तेरा फर्स्ट नंबर है।' नीयत मत बिगाड़ना। नियति तो बहुत ही ग़जब की चीज़ है न, तू यों जान-बूझकर मत बिगाड़ना। लेकिन लोग तो समझते नहीं हैं न! लोग यह समझते नहीं हैं न, कि यह सब से बड़ी चीज़ है!

प्रश्नकर्ता : नहीं समझते तभी तो बिगड़ता है न!

दादाश्री : हाँ, देखो मैंने आपको नियति दिखाई न? आपने नियति देखी न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दिखाई, दादा।

दादाश्री : व्यवहार में चलता रहता है लेकिन पता नहीं चलता।

प्रश्नकर्ता : दादा के ज्ञान से सब से बड़ा फायदा यह हो जाता है कि वह मुड़ जाता है न, तो सीधा नियति में ही चला जाता है।

दादाश्री : सीधा नियति में ही चला जाता है। इसलिए फिर मोड़ नहीं आते। अत: यदि करोड़ का नुकसान हो जाए तो सभी से कह देता है कि 'भाई, मैं आपकी पाई-पाई चुका दूँगा। लोग तो गालियाँ देते हैं। नीयत बिगाड़ने के बाद भी क्या गाली नहीं देते?

प्रश्नकर्ता : लोग तो गालियाँ देते ही हैं।

दादाश्री : इसलिए तू यह टाइम बीतने दे न! यदि तेरा भाव, तेरी नीयत नहीं बिगड़ी होगी तो वे इशारे से ही समझ जाएँगे कि 'भाई की दानत अच्छी है।' वे समझ जाएँगे या नहीं कि दानत साफ है? यदि दानत साफ होगी तो कल्याण हो जाएगा!

यदि नीयत बदल गई तो दु:खी होओगे

प्रश्नकर्ता : लोगों की नीयत खराब क्यों हो जाती है?

दादाश्री : अच्छी नीयत होती तब तो संसार होता ही नहीं न! सब की यदि अच्छी नीयत होती तो संसार होता ही नहीं, स्वर्ग ही कहलाता न! फिर तो पालकी उठाने वाले भी नहीं होते और पालकी में बैठने वाले भी नहीं होते। खराब नीयत वाला पालकी उठाता है।

जिसे हमने पाँच हज़ार रुपये दिए हैं, अब यदि उसकी नीयत खराब हो जाए। तब हमें क्या करना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : फिर तो कानून ही संभालेगा। कानून में जैसा होता हो वैसा करना पड़ेगा।

दादाश्री : हाँ, कानून अनुसार जितना हो सके उतना करना, फिर भी हाथ में कुछ न आए तो क्या करना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : छोड़ देना पड़ेगा?

दादाश्री : हमें इतना समझ लेना चाहिए कि इस व्यक्ति की नीयत बदल गई है। यह व्यक्ति भविष्य में बहुत दु:खी होगा। तब उसके लिए हमें भगवान से कहना चाहिए कि 'हे भगवान, उसे सद्बुद्धि दीजिए।' वह व्यक्ति बहुत दु:खी होगा और जिसकी नीयत नहीं बदलती, वह सुखी होगा! इसलिए हमें समझ जाना चाहिए कि यदि इसकी नीयत बदली तो यह दु:खी होगा। जिस की नीयत नहीं बदलती वह सुखी होगा? अत: हमें समझ जाना है कि इसकी नीयत बदली है तो अब यह दु:खी होगा। अब यदि किसी की भी नीयत नहीं बदलेगी तो कैन दु:खी होगा। यानी यहाँ गड्ढा होगा तभी वहाँ टीला होगा। यदि गड्ढा ही नहीं होगा तो लेन्ड(समतल) लेवल में आ जाएगी।

उल्टे ज्ञान से बिगड़ती है नीयत

प्रश्नकर्ता : अब, लोगों की नीयत खराब क्यों हो जाती है?

दादाश्री : उसका खराब होने वाला हो, तब उसे अंदर से फोर्स (दबाव) आता है कि 'तू ऐसा कर ले न, सब हो जाएगा।' क्योंकि उसका बिगड़ना है। 'कमिंग इवेन्ट्स कास्ट देयर शेडोज़

बिफोर (जो होने वाला है उसका आभास हो जाता है)।'

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या उसे रोक सकते हैं?

दादाश्री : हाँ, उसे रोक सकते हैं। उसे ऐसा ज्ञान प्राप्त हुआ हो कि 'तुझे बुरे विचार आएँ फिर भी उनके लिए पश्चाताप करना'। तब ऐसा कहता कि, 'ऐसा नहीं होना चाहिए, ऐसा नहीं होना चाहिए' तो इस तरह रोक जा सकता है। जो बुरे विचार आते हैं वे मूलत: गत ज्ञान के आधार पर हैं लेकिन यदि आज का ज्ञान उसे ऐसा कहे कि 'यह करने जैसा नहीं है।' तो फिर वह उसे बदल सकता है। समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : क्या नीयत इच्छाओं के कारण नहीं बिगड़ती?

दादाश्री : कैसी इच्छाएँ?

प्रश्नकर्ता : उसे इच्छा हो कि यह भोग लेना है। इसलिए हराम के पैसे ले लेता है।

दादाश्री : नीयत बिगड़ना यानी ऐसा नहीं है कि पाँच लाख रुपयों के लिए बिगाड़ना। ये तो, पच्चीस रुपयों के लिए भी दानत बिगाड़ देते हैं! अर्थात् भोगने की इच्छा से इसका कोई लेना-देना नहीं है। उसे इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त हुआ है कि 'क्या देना है? देने के बजाय यहीं इस्तेमाल करो। जो होगा देखा जाएगा।' उसे ऐसा उल्टा ज्ञान मिला है।

अंदर का मत बिगड़ने देना

जब लोगों पर बहुत कर्ज़ हो जाता है तब पहले तो ऐसा ही रहता है कि दे देना है फिर ऐसा लगने लगता है कि 'अब क्या देना?' तो उससे बिगड़ जाता है। अंदर से हस्ताक्षर नहीं करने चाहिए।

यदि संयोगवश बाहर बिगड़ जाए तो भले ही बिगड़ जाए लेकिन अंदर मत बिगड़ने देना। यदि आपके पास पैसे न हों तो भीतर यों साफ रखना कि 'देना ही है।' यदि अंदर का नहीं बिगड़ने दिया तो दे पाओगे। अंदर का नहीं बिगड़ा, तो 'अपना' नहीं बिगड़ा। बाहर का बिगड़ा हुआ तो चिता के साथ चला जाएगा। फिर बाहर का सुधरे या न भी सुधरे।

यदि अंदर कुछ भी नहीं बिगड़ता है तो बाहर भी कुछ नहीं बिगड़ता। यह संसार का गुप्त रहस्य है।

भाव शुद्ध ही होना चाहिए

प्रश्नकर्ता : भाव शुद्ध होना चाहिए न? भाव ही बिगड़ जाए तो वापस कैसे लौटा पाएँगे?

दादाश्री : भाव शुद्ध नहीं है, तो उसी से हम हिसाब लगा सकते हैं कि यह लौटा नहीं पाएगा। यदि भाव शुद्ध हो तो समझना कि यह लौटा पाएगा। आपको अपनी तरह से तौल लेना है।

किसी से रुपये लिए हों, लेकिन यदि कोई परेशानी हो तो इतना तो देख लेना चाहिए कि अपना भाव शुद्ध रहता है या नहीं? यदि आपका भाव शुद्ध रहे तो समझना कि, 'ये पैसे हम ज़रूर लौटा पाएँगे।' फिर उसके लिए चिंता नहीं करनी चाहिए। इतना ही देखना कि भाव शुद्ध रहता है या नहीं। यह उसका लेवल है। सामने वाला भाव शुद्ध रखता है या नहीं, उस पर से हम समझ

सकते हैं। उसका भाव शुद्ध नहीं रहे, तभी हमें समझ जाना चाहिए कि ये पैसे चले जाएँगे।

भाव शुद्ध ही होना चाहिए। भाव यानी खुद के अधिकार से आप क्या करोगे? तब कहते हैं कि, 'यदि रुपये होते तो आज ही लौटा देता!' इसे शुद्ध भाव कहते हैं। भाव में तो यही होना चाहिए कि जल्द से जल्द कैसे लौटा दूँ।

हिसाब चुकाने के लिए है यह जन्म

प्रश्नकर्ता : दिवाला निकाल दे और फिर पैसे न लौटाए तो फिर क्या अगले जन्म में चुकाने पड़ेंगे?

दादाश्री : उसे फिर पैसे देखने भी नहीं मिलेंगे। पैसे छू भी नहीं पाएगा। अपना नियम क्या कहता है कि 'रुपये लौटाने के बारे में आपका भाव नहीं बिगड़ना चाहिए', तो एक दिन आपके पास रुपये आएँगे और कर्ज़ चुका सकोगे! चाहे कितने भी रुपये हों लेकिन आखिर में रुपये साथ में नहीं आते, इसलिए काम *निकाल* लो। अब फिर से मोक्षमार्ग नहीं मिलेगा। इक्यासी हज़ार साल तक मोक्षमार्ग हाथ नहीं आएगा। यह आख़िरी 'स्टेन्ड' है, अब आगे 'स्टेन्ड' नहीं है।

पैसों का या फिर संसार में और कोई कर्ज़ नहीं होता, राग-द्वेष का कर्ज़ होता है। पैसों का कर्ज़ होता तो हम ऐसा नहीं कहते कि, 'भाई, पाँच सौ पूरे माँग रहा है तो पाँच सौ पूरे लौटा दे, वर्ना तू छूट नहीं पाएगा!' हम तो क्या कहते हैं कि, 'उसका *निकाल* करना, पचास देकर भी *निकाल* कर देना' उसे पूछ लेना कि, 'आप खुश हो न?' और वह कहे कि, 'हाँ, मैं खुश हूँ', तो समझो *निकाल* हो गया।

जहाँ-जहाँ आपने राग-द्वेष किए होंगे, वे राग-द्वेष आपको वापस मिलेंगे।

किसी भी तरह से पूरा हिसाब चुका देना है। यह पूरा जन्म हिसाब चुकाने के लिए ही है।

अहंकार को ठेस नहीं लगनी चाहिए

जिसे *निकाल* करना है उसे करना आ जाएगा। जिसे *निकाल* नहीं करना हो उसे नहीं आएगा। *निकाल* करने वाला और जिसका *निकाल* हो रहा है, वे सभी समझ जाते हैं कि यह *निकाल* कर रहा है! *निकाल* अर्थात् सभी के मन का समाधान हो, ऐसा नियम। जो पचास माँगता हो उसे पचास ही दें, ऐसा कोई नियम नहीं है। *निकाल* होना चाहिए। तू कितने रुपये देकर *निकाल* करेगा तब?

प्रश्नकर्ता : पचास रुपये।

दादाश्री : पूरे ही? यदि नहीं होंगे तो क्या करेगा? यदि हों तो पूरे दे देना। न हों तो दस रुपये कम-ज़्यादा करके केस खत्म कर देना। तो हो जाएगा *निकाल*। सामने वाला ऐसा नहीं कहता कि, 'मेरे पूरे पैसे दो।' सामने वाले से इतना कहो कि 'भाई, इस बार पैसे नहीं हैं। क्या आप चला लेंगे?' तब यदि वह कहे, 'हाँ, चला लूँगा', तो हो गया! दुनिया इसी तरह चलती है न! अहंकार को संतोष होना चाहिए। उसके अहंकार को कोई ठेस नहीं लगनी चाहिए।

यों होता है समभाव से निकाल

सत्युग में यह संसार प्रेम से बंधा हुआ था और इस कलियुग में किससे? प्रेम तो अब रहा ही नहीं, बैर से ही बंधता है। यानी कि किसी जीव के साथ बैर नहीं बंधे, तो समभाव से *निकाल*।

यदि हज़ार रुपये के लिए कोई आपको पकड़ ले तब भी समझ लेना कि आगे-पीछे का कुछ (हिसाब) होगा! वर्ना सभी थोड़े ही पकड़ते हैं। कुछ तो हिसाब होगा! इसलिए जैसे-तैसे करके केस खत्म कर देना। कोई आपत्ति उठाए, कुछ कहे तभी से समझ जाना कि कोई कारण है। देयर इज़ समथिंग! सभी नहीं पकड़ लेते। और फिर से ऐसा संयोग आता भी नहीं है। संयोग से हमें समझ जाना है कि ऐसा संयोग आया, इसलिए समभाव से *निकाल* कर लो।

हर एक केस का निकाल कर देना है

प्रश्नकर्ता : मेरा एक प्रश्न है। मैंने एक रिक्शा वाले को पेपर का एक पार्सल दूसरी जगह पहुँचाने के लिए दिया था। उसने वह ट्रक से भेज दिया और ऊपर से पूरे पैसे माँग रहा है। पार्सल देर से पहुँचा। मैंने जाँच करवाई तब सब पता चला। अब वह रिक्शा वाला रोज़ ऑफिस में आकर परेशान करता है और मैं कहता हूँ कि, 'तुम्हें एक पैसा भी नहीं मिलेगा।' ऐसे में क्या करना चाहिए?

दादाश्री : हल कर लो। हर एक केस हल कर लो और यदि लड़ना हो, ऐसी हठ करनी हो तो किसी सेठ से करना। जो चाकू नहीं रखता, उनसे हठ करना। यह गरीब बेचारा, खाने का भी ठिकाना नहीं, शराब पीकर घूमता है, उसके साथ हल ला देना।

यह अपना इनाम है, ऐसा समझ कर दे दो

अभी सब उलझ गया है। इसलिए छेड़ना मत। कुली अगर ज़्यादा पैसे माँगे न, यदि वह उल्टा पकड़ ले कि इतने पैसे तो देने ही पड़ेंगे तो उसे कहना 'भाई, थोड़ा तो भगवान से डर।' तब यदि वह कहे कि 'भगवान से, क्यों डरूँ? यदि दो रुपये नहीं लेंगे तो खाएँगे क्या?' तब फिर उससे कहना कि 'लो भाई, ये दो रुपये और ऊपर से दस पैसे।' समझ जाना कि आठ आने का काम था लेकिन इसने दो रुपये ले लिए। समझ जाना कि ऐसा तो कभी-कभी ही मिलता है। रोज़ नहीं मिलता। अगले दिन यदि ढूँढने जाओगे तब भी वैसा नहीं मिलेगा। मज़दूर ही कहते हैं कि 'अरे, चाचा! दो रुपये कैसे ले सकता हूँ?' अत: कभी-कभी दो रुपये वाला मिल जाता है, कभी डेढ़ रुपये वाला भी मिल जाता है। कभी आठ आने वाला भी मिल जाता है। हमें यह क्यों मिला? अपना इनाम है! इसलिए उन्हें दे दो।

किसी को छेड़ना मत

किसी को ज़रा भी मत छेड़ना, क्योंकि सब जल उठा है। ऊपर से ऐसा लगता है कि नहीं जल रहा है। लपटें नहीं उठ रही हैं लेकिन भीतर में झुलस रहे हैं। ऊँगली छूते ही धमाका होगा। इसलिए इस काल में किसी से किसी प्रकार की किच-किच मत करना। बहुत जोखिम भरा काल है। जब वह गुस्सा हो जाए तब कहना कि 'भाई, हमें भी धंधा करना है न, वर्ना हम क्या खाएँगे?' इधर-उधर करके समझा-बुझाकर काम लेने जैसा समय है। सिर्फ गर्म लोहे पर ही हथौड़ा मार सकते हैं और कहीं तो नहीं मार सकते। यदि गर्म लोहे को न मारें तो भी परेशानी, उसे आकार नहीं दे पाएँगे। जबकि जीवित लोगों को तो, ज़रा सा हाथ लगाया कि खत्म। फिर भी उनकी प्रकृति देख लेनी है। आपका नौकर हो तो उनकी प्रकृति देख लेना। उसमें कोई हर्ज नहीं है। आप देख लो कि यह समझदार है, उसके साथ समझदारी वाली बातें करने में हर्ज नहीं है। लेकिन बाहर की पब्लिक के साथ संभालकर रहना। क्योंकि कब, कौन व्यक्ति, कैसे

चिढ़ जाए, क्या पता? फिर भी वह आपसे ही क्यों टकराया? इसलिए समझा-बुझाकर उससे छूट जाना। यह काल विचित्र है इसलिए उस बेचारे को बहुत व्याकुलता रहती है। भीतर से बहुत दुःखी रहता है। ज़रा सा भी छेड़ने पर चाकू लगा देगा। सामने वाले को कब बहुत दुःख देता है? जब खुद का दुःख सहन नहीं होता, तभी न!

सामने वाले को दुःख न हो उस तरह से...

ऐसा है न, आप ये जो कर्म बाँधकर लाए हो न, वे मुझ से पूछे बगैर बाँधकर लाए हो। पिछले जन्म में मुझसे पूछने नहीं आए थे। मार्केट से जो मटीरियल मिला, उसे खरीदते रहे और बैंकों ने जितने ओवरड्राफ्ट दिए, वे जमा करते रहे। इसलिए मैंने कहा है कि ये ओवरड्राफ्ट लेकर कंगाल जैसी स्थिति हो गई है। इसलिए अब आप शुद्धात्मा हो जाओ। और बाकी का सब जो है, उसका *निकाल* कर देना। यह दुकान धीर-धीरे खाली कर देनी है। शक्कर हो तो शक्कर बेच दो और गुड़ हो तो गुड़ बेच दो। काली मिर्च हो तो काली मिर्च बेच दो और किसी से झगड़ा मत करना। कोई पैसे नहीं दे फिर भी उससे झगड़ना नहीं और कोई पैसे माँगे तो जल्द से जल्द लौटा देना और यदि आपके पास सुविधा न हो तो, 'बाप जी, बाप जी' करके, उसे दुःख न हो उस तरह, समभाव से *निकाल* करके छूट जाओ।

दुकान का ही निकाल कर लेना है

निकाल मतलब नई चीज़ नहीं खरीदनी है और बाकी सब निकालते जाना। उगाही हो तो उसे धीरे से समझा-बुझाकर काम *निकाल* लेना और जिसका जमा हो उसे लौटा देना। क्योंकि उगाही वाले तो रात को दो बजे भी आ सकते हैं। उन्हें तो जब चाहे तब आने की छूट है। और यदि कोई आपको नहीं लौटाए तो आपको कषाय नहीं होंगे। क्योंकि आपको तो गाँव जाना है और उन्हें यहीं रहना है। आपको अपने देश जाना है। वे देश में नहीं जाने देंगे, यदि आप कषाय करोगे तो। इसलिए आपको तो, यदि आपका हिसाब होगा तो छोड़कर चले जाना आगे। यदि उधार दिया हो और नहीं लौटाए तो, जितना बन पड़े उतना प्रयत्न करना। आखिर में समझा-बुझाकर काम लेना, 'साहब, बहुत तकलीफ है।' सौ में से पाँच-दस मिल जाएँ, तो वही ठीक। वर्ना फिर छोड़ दो, *निकाल* कर लेना। मलतब दुकान का *निकाल* ही करना है इस कलियुग में। और मैं यही कहता हूँ। अक्रम विज्ञान अर्थात् क्या? संपूर्ण विज्ञान, *निकाल* कर देना, बस। कुछ करना नहीं है।

कभी यदि कोई ज्ञानी से नहीं मिला हो लेकिन यदि वह इतना समझ ले कि, 'अपनी दुकान का निकाल कर देना है,' तब भी हल कर लेगा। अब सिर्फ दुकान ही खाली करनी है। यदि दुकान भरनी हो, नई बनानी हो, तभी सारी झंझट होगी। दुकान खाली करनी है। उसमें अलमारी खाली हो गई, बेच दी। तब कोई कहे, 'वह माल तीस में?' 'अरे, तीस नहीं पर अठाइस में दे दे न, अब हमें जाना है अपने देश में।' तब वह कहे, 'पैसे क्यों ले रहे हैं?' तब कहना, 'किसी के बाकी हों तो वे लौटाने पड़ेंगे न!' जमा-उधार सब 'लेवल' करना है। कोई रास्ता निकालना चाहोगे तो मिलेगा।

यह ज्ञान लिया है इसलिए अब तो हमें इसे हल कर लेना है! अब हमेशा के लिए इस संसार का हल ले आना है। यह संसार तो कभी सुखी ही नहीं होने देगा।

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

13 से 17 फरवरी : इस साल विवाहित महात्मा बहनों के लिए मोक्षमार्ग में प्रगति करवाने वाली वार्षिक शिविर पूज्यश्री के साथ अडालज त्रिमंदिर संकुल में आयोजित हुई थी। इस शिविर में पूज्यश्री द्वारा 'गर्वरस' विषय पर विशेष सत्संग और 'समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य' ग्रंथ पर पारायण किया गया था। देश-विदेश में रहने वाली 6000 से अधिक बहनों ने इस शिविर में अनोखे उत्साह से भाग लिया। हर साल की तरह इस साल भी बहनों को अलग-अलग ग्रुप में पूज्यश्री का सेवार्थी स्पेशल सत्संग मिला। सामायिक, ग्रुप एक्टिविटी, गरबा, आप्तपुत्रियों के साथ ग्रुप डिस्कशन वगैरह से शिविर में बहनों को भरपूर आनंद के साथ ही आध्यात्मिक प्रगति करने की अमूल्य बातें समझने को मिली।

19 से 23 फरवरी : अडालज त्रिमंदिर संकुल में विवाहित महात्मा भाईओं के लिए पाँच दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें 3100 महात्मा भाईओं ने भाग लिया। इस बार शिविर का टॉपिक था: गर्वरस। इसके अलावा ग्रीन पासधारक लोगों के लिए उम्र के अनुसार अलग-अलग ग्रुप में पूज्यश्री के साथ ब्रह्मचर्य संबंधी विशेष सत्संग हुआ था। बह्मचर्य (उत्तरार्ध) पुस्तक पर भी पारायण हुआ था। रात्रि सेशन में राजकोट सेन्टर के महात्माओं द्वारा 'गर्वरस' टॉपिक पर नाटक किया गया। इसके अलावा टॉपिक के अनुसार स्पेशल DVD, आप्तपुत्र सत्संग, GD और व्यक्तिगत मार्गदर्शन के लिए सहायता केन्द्र का भी आयोजन किया गया था। गरबा के सेशन के दौरान पधारकर पूज्यश्री ने महात्माओं का उत्साह बढ़ाया था। ब्रह्मचर्य से संबंधित सत्संग के दौरान कई महात्माओं ने विषय से संबंधित दोष जाहिर किए और पूज्यश्री से व्यक्तिगत आलोचना भी की थी।

26 फरवरी : अडालज त्रिमंदिर संकुल में रहने वाले सीनियर सिटिज़न महात्माओं के लिए पूज्यश्री की निश्रा में आगलोड जैन तीर्थ और ऋषिवन एडवेन्चर पार्क की एक दिवसीय यात्रा का आयोजन हुआ था। जिसमें लगभग 1000 महात्मा गए थे। सर्व प्रथम आगलोड में मणिभद्र वीर देव और आदिनाथ भगवान के दर्शन किए थे। उसके बाद पूज्यश्री ने डेढ़ घंटे तक सत्संग किया था। महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ समूह भोजन प्रसाद लिया। आप्तसंकुल के भाईओं-बहनों ने महात्माओं को भोजन परोसा था। आगलोड तीर्थक्षेत्र के व्यवस्थापकों द्वारा पूज्यश्री का अभिवादन किया गया था। दोपहर को सभी महात्माओं ने ऋषिवन एडवेन्चर पार्क में पहुँचकर अलग-अलग एक्टिविटी में भाग लिया था। पूज्यश्री की उपस्थिति में भी सीनियर महात्माओं ने खेल और एक्टिविटी का आनंद लिया था। पूज्यश्री ने इनफॉर्मल सत्संग भी किया था। शाम को प्रसाद लेकर महात्मा वापस आने के लिए रवाना हो गए। यात्रा में बुजुर्ग महात्माओं को बहुत आनंद आया।

29 फरवरी से 2 मार्च : पूज्यश्री की सौराष्ट्र सत्संग यात्रा की शुरुआत भावनगर सेन्टर से हुई थी। प्रथम दिन के प्रश्नोत्तरी सत्संग के बाद ज्ञानविधि में 925 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। स्थानीय महात्माओं के लिए पूज्यश्री के इनफॉर्मल सत्संग का आयोजन हुआ था। जिसका लाभ लगभग 400 महात्माओं ने लिया। अंतिम दिन आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग किया गया। पूज्यश्री भावनगर से अमरेली जाते हुए, भविष्य में निमित होने वाले भावनगर त्रिमंदिर के प्लोट पर रुके थे और प्रासंगिक आशीर्वचन देकर प्रार्थना करवाई। तब वहाँ पर लगभग 325 महात्मा हज़िर थे।

3 से 5 मार्च : अमरेली में दो साल के बाद पूज्यश्री के सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। उससे पहले अमरेली जिले के लगभग 125 गाँव में प्रोजेक्टर शो, आप्तपुत्र सत्संग हुआ और महात्माओं द्वारा प्रचार किया गया था। जिसके परिणाम स्वरूप पहले दिन के सत्संग के बाद आयोजित ज्ञानविधि में अभूतपूर्व प्रतिभाव देखने को मिला और 4850 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्यश्री ने अमरेली

त्रिमंदिर के दर्शन करके मंदिर के सेवार्थियों से बातचीत की और स्थानीय महात्माओं के साथ इनफॉर्मल सत्संग किया। त्रिमंदिर सत्संग हॉल में आयोजित सेवार्थी सत्संग में लगभग 400 सेवार्थीओं ने पूज्यश्री के सत्संग-दर्शन का लाभ लिया। ज्ञानविधि के लिए मुमुक्षुओं को लाने व ले जाने की सुविधा की गई थी।

6 से 8 मार्च : धोराजी में 2002 के बाद पहली बार पूज्यश्री की निश्रा में ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। 6 मार्च को पूज्यश्री का 50वाँ ज्ञानदिवस का भव्य रूप से मनाया गया। जिसका लाभ 1500 से अधिक महात्माओं को मिला। केक कटिंग के बाद धोराजी और राजकोट GNC के बच्चों द्वारा सांकृतिक कार्यक्रम किया गया। उसके बाद पूज्यश्री का प्रश्नोत्तरी सत्संग हुआ। अंत में आप्तपुत्रों ने पूज्यश्री को उनकी ज्ञानदशा, जागृति और ज्ञान के अनुभव से संबंधित प्रश्न पूछे। ज्ञानविधि के एक महीने पहले से आसपास के लगभग 40 गाँवों में प्रोजेक्टर शो, आप्तपुत्र सत्संग, रिक्शा में ऑडियो क्लिप द्वारा प्रचार किया गया था। ज्ञानविधि से प्रेरणा मिले, उस हेतु से एक दिन पहले आप्तपुत्र सत्संग का आयोजन किया गया। ज्ञानविधि में 2050 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। धोराजी में भी ज्ञानविधि के लिए मुमुक्षुओं के लिए यातायात की सुविधा की गई थी। 8 तारीख को नए ज्ञान लिए महात्माओं को और अधिक आज्ञा समझाने के लिए आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप किया गया।

8 से 10 मार्च : वेरावल में पाँच साल बाद आयोजित सत्संग ज्ञानविधि कार्यक्रम के प्रचार के लिए वेरावल के आसपास के लगभग 40 गाँवों में प्रोजेक्टर शो व आप्तपुत्र सत्संग का आयोजन किया था। GNC के बच्चों के नृत्य द्वारा पूज्यश्री का स्वागत किया गया था। प्रथम दिन आप्तपुत्र सत्संग के बाद आयोजित ज्ञानविधि में 426 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। फार्महाउस में ओयोजित सेवार्थी सत्संग का लाभ लगभग 350 से अधिक स्थानिय महात्माओं ने लिया पूज्यश्री ने चौपाटी पर मोर्निंग वॉक की और महात्माओं के साथ वेरावल में त्रिमंदिर के लिए सूचित जगह पर जाकर, त्रिमंदिर के शीघ्र निर्माण के लिए प्रार्थना की, नए ज्ञान प्राप्त महात्माओं के लिए आप्तपुत्र सत्संग रखा गया।

10 से 12 मार्च : पूज्यश्री पोरबंदर में चार साल बाद पधारे थे। पूज्यश्री द्वारा सर्व प्रथम 2003 में पोरबंदर में ज्ञानविधि हुई थी। स्थानीय महात्माओं द्वारा मेर जाति के पहनावे में 'मणियारो रास' लोक नृत्य करके पूज्यश्री का भव्य स्वागत किया था। यहाँ समुद्र किनारे चौपाटी एरिया में सत्संग का आयोजन हुआ था। प्रथम दिन आप्तपुत्र सत्संग का आयोजन हुआ। ज्ञानविधि में 765 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पोरबंदर और आसपास के लगभग 20 गाँवों में प्रोजेक्टर शो और आप्तपुत्रों द्वारा प्रचार किया गया था। सेवार्थी सत्संग में पूज्यश्री 300 महात्माओं के साथ सत्संग किया। कार्यक्रम के दौरान मेर जाति की ड्रेस में बहनों ने रास किया। पूज्यश्री ने पोरबंदर के समुद्र किनारे मोनिर्ग वॉक की और महात्माओं के साथ इनफोर्मल बातचीत की। पूज्यश्री विमान द्वारा पोरबंदर से अहमदाबाद वापस लौटे।

इस सत्संग ट्रिप के दौरान 9000 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। उपरोक्त सभी सेन्टरर्स पर सेवार्थी सत्संग के दौरान पूज्यश्री के 50वें ज्ञान दिवस का उत्सव मनाया गया।

विशेष निवेदन

कोरोना वायरस महामारी की वर्तमान परिस्थिति में सरकारी निर्देशो का पालन कर के पूज्यश्री दीपकभाई की निश्रा में अड़ालज में हिन्दी शिविर और दूसरे सभी कार्यक्रम तथा आप्तपुत्रों-आप्तपुत्रीओं के विविध सेन्टरो में आयोजित सभी कार्यक्रम विलंबित किए गए है। भविष्य में परिस्थिति सामान्य होने के बाद सरकार द्वारा धार्मिक कार्यक्रमो के लिए अनुमति देने के बाद कार्यक्रम आयोजित होंगे।

6 से 8
मार्च
2020
धोराजी
सत्संग-ज्ञानविधि

8 से 10
मार्च
2020
वेरावल
सत्संग-ज्ञानविधि

पोरबंदर
सत्संग-ज्ञानविधि
10 से 12
मार्च
2020

अड़ालज
पूज्यश्री के 50वें ज्ञान दिवस का महोत्सव
13
मार्च
2020

अप्रैल 2020
वर्ष-15 अंक-6
अखंड क्रमांक - 174

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/036/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

लक्ष्मी को लेकर नॉर्मेलिटी अच्छी

लोगों को लक्ष्मी संभालनी भी नहीं आती और भोगनी भी नहीं आती। भोगते समय कहेगा कि 'इतना महँगा? इतना महँगा कैसे ले सकते हैं?' अरे, चुपचाप भोग न! लेकिन भोगते समय भी दु:ख! लोग परेशान करें, तब भी कमाना चाहिए। कई लोग तो उधार नहीं चुकाते। कमाते हुए भी दु:ख और संभालते हुए भी दु:ख तो संभालने रहने पर भी बैंक में रहता नहीं है न! बैंक के खाते का मतलब ही है, क्रेडिट और डेबिट, पूरण-गलन (चार्ज-डिस्चार्ज)। लक्ष्मी जाती है तब भी बहुत दु:ख देती है। यह तो नॉर्मल हो, वही अच्छा, वर्ना बाद में लक्ष्मी खर्च करने पर दु:ख होता है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.